IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता का अध्ययन

▪ प्रतिभा यादव

सारांश

संसार के सभी मनुष्य शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि दृष्टियों में सर्वथा समान नहीं होते हैं उनकी इस असमानता के कारणों में वातावरण एक मुख्य कारण है। यह वातावरण बालक को पहले परिवार तत्पश्चात् विद्यालय में प्राप्त होता है। वास्तव में वातावरण का सम्बन्ध चारों ओर की परिस्थितियों से है जो मनुष्य को प्रभावित करती हैं और मनुष्य उनके प्रति प्रतिक्रियायें भी करते हैं। जो बाह्य परिस्थितियाँ मनुष्य को प्रभावित नहीं करतीं हैं वह उस मनुष्य के वातावरण का अंग नहीं होती हैं। यदि परिवार एवं विद्यालय का वातावरण सौहाद्रपूर्ण, आत्म–संतुष्टि, सुरक्षा प्रदान करने वाला होता है तो समायोजन को बढ़ावा देता है। परिवार एवं विद्यालय में सहयोग, समझ और समन्वय की कमी कुसमायोजन का कारण हो सकती है। शोध के उद्देश्य के रूप में 1.माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का यौन-भेद के परिप्रेक्ष्य में समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना। 2.माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का यौन-भेद के परिप्रेक्ष्य में समायोजन क्षमता के विभिन्न आयामों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना। न्यादर्श हेतु प्रस्तुत शोध के निमित्त शोधार्थी ने ग्वालियर नगर के मध्य प्रदेश बोर्ड, भोपाल से मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 के 200 विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया। प्रस्तुत शोध के निमित्त उपकरण के रूप में **ओझा, आर.के. (2017)** द्वारा निर्मित **बेल्स एडजस्टमेंट एन्वेटरी** का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष 1.माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के समायोजन क्षमता संबंधी प्राप्तांकों का टी-मान 2.59 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। 2.माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं का समायोजन क्षमता संबंधी आयाम गृह एवं स्वास्थ्य से प्राप्त टी-मान सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक नहीं पाया गया जबकि समायोजन क्षमता का आयाम सामाजिक एवं संवेगात्मक के आधार पर प्राप्त टी-मान यौन भेद के परिप्रेक्ष्य में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

▪ **शोधार्थी, आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाज कार्य अध्ययन शाला, जीवाजी विश्वविद्यालय,ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत।**

प्रस्तावना

जीव वैज्ञानिक भौतिक परिस्थितियों के साथ समायोजन को अनुकूलन कहते हैं जबकि मनोवैज्ञानिक अपने वातावरण के साथ अनुकूलन को समायोजन कहते हैं। बालक अपने परिवार एवं विद्यालय में विभिन्न अंतः क्रिया करके, दूसरों के व्यवहार को देखकर समाज के के समक्ष अनेक प्रतिक्रियाएं करता है। उक्त प्रक्रियाओं, व्यवहार का, समाज के समक्ष प्रस्तुतीकरण समायोजन कहलाता है। समायोजन क्षमता एक जटिल मनोवैज्ञानिक प्रत्यय है तथा इसका विकास जीवन में धीरे–धीरे परन्तु निरन्तर होता है। यदि परिवार में प्रारंभिक बाल्यावस्था से कुछ बातों का विशेष ध्यान दिया जाये तो उच्च समायोजन क्षमता का विकास किया जा सकता है। गृह-वातावरण के साथ समायोजन क्षमता ऐसा प्रत्यय है जो बालक को उसकी वर्तमान चुनौतियों एवं कठिन परिस्थितियों के साथ उचित ढ़ंग से संतुलन स्थापित करके कुशल और सफल जीवन जीने के लिये प्रेरणा स्रोत बनता है। परिवार के पश्चात विद्यालय ही ऐसा कारक है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों को शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक, नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। अतः अभिभावकों के साथ–साथ शिक्षकों की विशेष जिम्मेदारी है कि किशोर विद्यार्थी के सामने ऐसे तथ्य, कारक, अनुभव, क्रियाएं, व्यवहार प्रस्तुत किए जाएं जिससे वे देश के भावी निर्माता बन सके। **सिंघानियाँ (2010)** ने शोधोंपरान्त पाया कि जब बालक घर से निकलकर विद्यालय पहुँचता है तो घर के सभी कारकों की तुलना विद्यालय के सभी आयामों से करता है, यहाँ तक कि माता–पिता के व्यवहार से सम्बन्ध करके अध्यापक के व्यवहार की तुलना करता है जिससे उसमें समायोजन का गुण विकसित हो जाता है। बालक जैसे वातावरण में रहता है उसमें उसी प्रकार के संवेग उत्पन्न और विकसित होते हैं। संवेग न केवल बालक के व्यवहार का निर्धारण करते हैं, बल्कि उसकी समायोजन क्षमता को भी प्रभावित करते हैं। यदि बालक ऐसे व्यक्तियों के मध्य रहता है जिनमें समय–समय पर लड़ाई–झगड़ा होता है तो निश्चित रूप से बालक में क्रोध का संवेग अधिक मात्रा में होगा।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता का अध्ययन।

शोध के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों का यौन-भेद के परिप्रेक्ष्य में समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों का यौन-भेद के परिप्रेक्ष्य में समायोजन क्षमता के विभिन्न आयामों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं

1. माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों का यौन-भेद के परिप्रेक्ष्य में समायोजन क्षमता में मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों का यौन-भेद के परिप्रेक्ष्य में समायोजन क्षमता के विभिन्न आयामों के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन के चर

स्वतंत्र चर–यौन-भेद (छात्र एवं छात्रायें)
परतंत्र चर– समायोजन क्षमता

अध्ययन विधि

शिक्षा शास्त्र में अनेक प्रकार की अध्ययन विधियां हैं। किंतु शोध के निमित्त शोधार्थी ने वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

न्यादर्श विधि

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी ने सौदेश्य विधि द्वारा माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया। विद्यार्थियों को यादृच्छिकी विधि द्वारा चयनित किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के निमित्त शोधार्थी ने ग्वालियर नगर के मध्य प्रदेश बोर्ड, भोपाल से मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 के 200 विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध के निमित्त उपकरण के रूप में **ओझा, आर.के. (2017)** द्वारा निर्मित **बेल्स एडजस्टमेंट एन्वेटरी** का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी प्रविधियां

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों के सारणीयन एवं निष्कर्ष प्राप्त करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मान का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं का समायोजन क्षमता के सन्दर्भ में समान होते है अथवा उनमें अन्तर होता है? इस तथ्य के उत्तर जानने हेतु छात्र एवं छात्राओं के समायोजन क्षमता सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्यमानों की गणना कर उनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणामों को निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है–

तालिका क्रमांक–1

माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत छात्र–छात्राओं के समायोजन क्षमता सम्बन्धी प्राप्तांकों की मध्यमान, प्रमाणिक विचलन मान, टी-मान व पी.मान।

क्रं.सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन मान	टी-मान	पी.मान
1	छात्र	100	99.52	18.07	2.59	0.05 सार्थक है।
2	छात्राएँ	100	94.18	16.03		

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 1 के अध्ययन से स्पष्ट है कि यदि दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर के सन्दर्भ में टी-मान (2.59) पर दृष्टिगत किया जाए तो स्पष्ट हो रहा है कि दोनों समूहों के मध्यमानों में निहित अन्तर वास्तविक कारणों के फलस्वरूप न कि संयोगवश है, क्योंकि प्राप्त टी-मान सांख्यिकी दृष्टिकोण से 95 प्रतिशत विश्वास स्तर पर सार्थक प्राप्त हुआ है। अतः प्रस्तुत उद्देश्य से सम्बन्धित परिकल्पना''**माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं में समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है**'' को अस्वीकार किया जाता है। उक्त तथ्य की पुष्टि **बासु, एस.(2012)** ने अपने शोध के उपरांत पाया कि छात्रों की तुलना में छात्राओं का समायोजन क्षमता उच्च पाई गई। **साइमन, (2015)** ने पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, से हो रही है।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों का यौन-भेद के परिप्रेक्ष्य में समायोजन क्षमता के विभिन्न आयामों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका क्रमांक-2

माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत छात्र-छात्राओं के समायोजन क्षमता सम्बन्धी प्राप्तांकों के विभिन्न आयामों के आधार पर मध्यमान, प्रामाणिक विचलन मान, टी.मान व पी.मान

क्रं. सं	समायोजन क्षमता के विभिन्न आयाम	संख्या	मध्यमान		प्रामाणिक विचलन मान		टी-मान	पी.मान
			छात्र	छात्राओं	छात्र	छात्राओं		
1	गृह	200	23.02	23.16	5.05	4.13	1.12	0.05 सार्थक नहीं है।
2	स्वास्थ	200	16.71	17.19	5.44	5.61	1.03	0.05 सार्थक नहीं है
3	समाजिक	200	29.09	23.49	5.52	3.40	3.09	0.01 सार्थक है।
4	संवेगात्मक	200	20.72	24.30	7.07	4.06	2.75	0.01 सार्थक है।

तालिका क्रमांक 2 के गहन निरीक्षणोपरांत विदित होता है कि समायोजन क्षमता के आयाम गृह एवं स्वास्थ्य के आधार पर छात्र व छात्राओं के मध्य तुलना करने पर प्राप्त टी–मान सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया। जबकि समायोजन क्षमता के अन्य आयाम सामाजिक एवं संवेगात्मक का छात्र की तुलना में छात्राओं का मध्यमान मूल्य उच्च है। साथ ही प्राप्त टी–मान सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक पाया गया। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि माध्यमिक स्तर के किशोर बालिकाओं को बालकों की अपेक्षा बचपन से ही सभी के साथ समायोजन करके रहना सिखाया जाता है। उदाहरणार्थ परिवार के अन्य सदस्य प्रायः यह कहते हैं कि तुम्हें दूसरे घर जाना है, इतनी ज्यादा जिद करना ठीक नहीं है। साथ ही किशोर छात्राएं स्वभाव से ही शांत, धैर्यवान, सहनशील होती है। अर्थात छात्रों की तुलना में छात्राएं संवेगात्मक रूप से अधिक परिपक्व होती हैं। अतः प्रस्तुत उद्देश्य से सम्बन्धित परिकल्पना **''माध्यमिक विद्यालय के यौन–भेद के परिप्रेक्ष्य में समायोजन क्षमता के विभिन्न आयामों के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है''** को अस्वीकार किया जाता है। **देविका.(2014).** ने शोधोंपरांत पाया कि छात्र छात्राओं की संवेगात्मक समायोजन के मध्य सार्थक अंतर पाया। साथ ही समायोजन क्षमता के आयाम गृह, शैक्षिक एवं आर्थिक समायोजन में छात्र व छात्राओं के मध्य में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। **यलहा.(2012).** ने भी निष्कर्षस्वरूप पाया कि छात्र व छात्राओं में संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। **कोईथवाल.(2018).** ने अपने शोध के परिणाम स्वरूप पाया कि संवेगात्मक परिपक्वता, परिवार समायोजन एवं व्यक्तित्व एक दूसरे से अंतर संबंधित होते हैं। **दीपशिखा एवं भनूत.(2009).** ने शोधोपरांत पाया कि स्वतंत्रता एवं नियंत्रण का किशोर छात्राओं के सामाजिक समायोजन पर धनात्मक व सार्थक प्रभाव

पड़ता है।**रीना.(2022).**ने शोधोंपरान्त पाया कि कक्षा दशम के छात्र–छात्राओं पर संवेगात्मक समायोजन, शैक्षिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। **घटक, रानी (2018)** ने शोधोपरांत पाया कि गृह समायोजन छात्रों की तुलना में छात्राओं में उच्च प्रेक्षित हो रहा है। **मधुकुमार एवं कुमार, लाल.(2015).** ने निष्कर्ष स्वरूप पाया कि गृह–समायोजन का छात्र–छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

1.माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत छात्र-छात्राओं के समायोजन क्षमता संबंधी प्राप्तांकों का टी-मान 2.59 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

2.माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत छात्र-छात्राओं का समायोजन क्षमता संबंधी आयाम गृह एवं स्वास्थ्य से प्राप्त टी-मान सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक नहीं पाया गया जबकि समायोजन क्षमता का आयाम सामाजिक एवं संवेगात्मक के आधार पर प्राप्त टी-मान यौन भेद के परिप्रेक्ष्य में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

सुझाव

विद्यालय हेतु

1. विद्यालय में शिक्षण सहायक सामग्री (श्रव्य दृश्य सामग्री) होना चाहिए।
2. शिक्षा क्षेत्र प्रदर्शन, स्वयं करके सीखना या यात्रा द्वारा सिखाना चाहिए।
3.विद्यालय में विशेष विद्यार्थियों के लिए विशेष सुविधाओं का प्रबंध होना चाहिए।

अध्यापक हेतु

1. शिक्षक को चाहिए कि अधिगमकर्ता के मन में विषय के प्रति रुचि जागृत करें।
2. शिक्षक को मात्र परीक्षा हेतु अध्यापन नहीं करना चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों को अच्छे प्रकार से समझ में आ जाए।
3. शिक्षक को विद्यार्थी में पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
4. शिक्षक को किसी भी विद्यार्थी के साथ अन्याय पूर्ण व्यवहार नहीं करना चाहिए।
5. शिक्षक को सदैव विद्यार्थियों की प्रति आशावादी, सहनशील, धनात्मक प्रवृत्ति रखनी चाहिए।

अभिभावक हेतु

1. अभिभावकों को अपने बच्चों के लिए समय देना चाहिए।
2. अभिभावकों को अपने बच्चों के प्रति अतः संबंध विकसित करना चाहिए।
3. अभिभावकों को बच्चों को उचित वातावरण जो कि शैक्षिक व व्यावहारिक दृष्टिकोण से उचित हो देना चाहिए।
4. अभिभावकों को बच्चों को जीवन में क्या बना है, क्या उनके लिए उचित है आदि से संबंधित मार्गदर्शन समय–समय पर करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Hussain, A. Kumar, A. & Husain, A. (2008). Academic Stress and Adjustment among High School Students. Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, 34 (4),70-73.

2. Jalpaben A. Limbachiya.(2021). International Journal of Research in Humanities & Soc. Sciences.Vol.9, Issue: 5, May: 2021 ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

3. Ray, Corey E.; Elliott, Stephen N. (2006). Social Adjustment and Academic Achievement: A Predictive Model for Students with Diverse Academic and Behavior Competencies.Questia: Trusted Online Research, 35 (3), 2-5.

4. Shivagunde, S. & Kulkarni, V.V. (2012). School Adjustment and Its Relationship with Academic Achievement among Tribal Students. IJRDMS, 6(1),139-152.

5. Yellaiah.(2012).A Study of Adjustment on Academic Achievement of High School Students, International Journal of Social Sciences and Interdisciplinary Research, 1 (5). 84-9